80% 20% क्या भारत मेक इन इंडिया से आत्मनिर्भरता की राह पर आगे बढ़ रहा है?

70% 30% क्या मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर मेक इन इंडिया की सफलता के लिए सही दुरुस्ती है?

मुद्दा से संबंधित अपनी राय, सुझाव और प्रतिक्रिया मुद्दा@dainikjagran.com पर भेज सकते हैं।

मेक इन इंडिया

आत्मनिर्भर भारत का मंत्र

57% बढ़ा है मैन्यूफैक्चरिंग में निवेश 2014-2022 के दौरान पिछले आठ वर्षों की तुलना में

12 लाख करोड़ पहुंच गया है पीएलआइ की कुल निवेश के जरिये हुआ कुल उत्पादन

श्रम सुधारों से ही बढ़ेगी मैन्यूफैक्चरिंग की रफ्तार

एस.एन. अली
सदस्य, नीति आयोग

मेक इन इंडिया पहल से मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर में विकास तो हुआ, पर रोजगार और मैन्यूफैक्चरिंग बेस का विस्तार करने में अभी सुधार की जरूरत है। देश में मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर तेजी से विकास करे, इसके लिए श्रम सुधारों को लागू करना जरूरी लगता है।

मेक इन इंडिया पहल की शुरुआत में मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर में जो उम्मीद जताई गई थी, वह पूरी नहीं हो पाई है। यह सही है कि भारत में 10 वर्ष पहले की तुलना में मैन्यूफैक्चरिंग की हिस्सेदारी 17 प्रतिशत थी और अब यह तकरीबन 17 प्रतिशत है। लेकिन इसका अगला पड़ाव था कि निवेश बढ़ेगा, रोजगार का सृजन होगा और मैन्यूफैक्चरिंग का बेस बढ़ेगा। इस दिशा में मैन्यूफैक्चरिंग को बढ़ावा नहीं मिला है। आपको याद होगा जब मेक इन इंडिया की शुरुआत हुई थी तो 2014 से पहले के आंकड़ों पर गौर करना होगा। 2005 से 2014 के बीच मैन्यूफैक्चरिंग के आंकड़े लिए गए थे। तब भारत में लगातार बेहतर प्रदर्शन में कमी के कई कारण थे जो अब नहीं हैं।

यहां मैं यह भी कहूंगा कि हमारी यही है कि हमारा यहां निवेश करना अनिवार्य है या नहीं यह तय नहीं है। यह बहुत से कारकों से प्रभावित है। पहला तो मैन्यूफैक्चरिंग कुशल और सस्ते कुशल श्रमिकों के साथ मैन्यूफैक्चरिंग कुशल नहीं रहेगी। यह उत्पादन बढ़ाने के लिए कुशल श्रमिकों की जरूरत है। यह बात सही है कि भारत में जनसंख्या बहुत है, लेकिन कुशल श्रमिकों की संख्या बढ़ाने के लिए हमें बहुत कुछ करना होगा। इसके अलावा श्रम सुधारों के संबंध में भी